कृपया प्रकाशनार्थ **23 दिसंबर 2009**

भारतीय जनता पार्टी के नेता और पूर्व रेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री. राम नाईक द्वारा 23 दिसंबर 2009 को मुंबई के पत्रकार सम्मेलन में वितरीत किया गया निवेदन

"रेलवे श्वेतपत्रिका - प्रधानमंत्री माफी मांगे " - राम नाईक

मुंबई, बुधवार : " रेल राज्य मंत्री सुश्री ममता बैनर्जी ने, लोकसभा में पेश किए गए श्वेतपत्र के माध्यम से तथाकथित 'मैनेजमेंट गुरु' पूर्व रेल मंत्री श्री. लालू प्रसाद यादव के बडबोलेपन का, अक्षरशः पर्दाफाश किया है. उनके दिकभ्रमित करनेवाले रेल बजट को पूरे मंत्रीमंडल ने मान्यता दी थी. मंत्रीमंडल की जवाबदारी सामूहिक होती है, इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह को उस दिकभ्रमित करनेवाले रेल बजट के लिए पूरे देश से क्षमा मांगनी चाहिए." ऐसी मांग भारतीय जनता पार्टी के नेता और पूर्व रेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री. राम नाईक ने आज मुंबई में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में की.

इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए श्री. राम नाईक ने आगे कहा ,"अभी हाल ही में समाप्त लोकसभा अधिवेशन के अंतिम दिन रेलमंत्री सुश्री ममता बैनर्जी ने रेल मंत्रालय की श्वेत पत्रिका को संसद के पटल पर रखा जिसमें श्री. लालू प्रसाद यादव के पाच वर्षों के कार्यकाल का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया है. श्री. लालू प्रसाद के बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए जब मैंने कहा था कि मुनाफे के उनके आँकडे झूठे है तब सबको लगा की मैं केवल विरोध के लिए विरोध कर रहा हूँ. मगर अब ममता जी की श्वेत पत्रिका भी साफ कहती है कि 2006-2007 में 20,339 करोड रुपए की 'कैश सरप्लस' थी और श्री. लालू प्रसाद के कथनानुसार वो नफा नहीं था. श्वेत पत्रिका से श्री. लालू प्रसाद की पोल खुल गयी है. अब साफ है की जितना ढिंढोरा उन्होनें पिटा असल में उतना काम नही हुआ हैं. श्री. लालू प्रसाद ने विगत् पाच वर्षों में 189 सुपरफास्ट गाडियों की घोषणा की थी. मगर वास्तव में कइ गाडियों के द्वारा लगनेवाली समयसीमा में कमी तो नही की गई उल्टे किराया बढाया गया. उसी प्रकार 2008-2009 में 'तत्काल आरक्षण' के कारण रेलवे को रु. 605 करोड़ की प्राप्ति हुई. वह गलत तरीके से हुई. 'तत्काल आरक्षण' के लिए शुरुआत तें 5.6 प्रतिशत जगह थी उसे बढकर 14.2 प्रतिशत तक कर दिया गया. इसकी वजह से नियमित आरक्षण व्यवस्था के अंतर्गत यात्रियों को आरक्षण मिलने में दिक्कत तो होने ही लगी और भ्रष्टाचार में भी काफी बढोतरी हुई. इन सब बातों के अलावा और भी कई महत्त्वपूर्ण बातें इस श्वेत पत्र में उजागर हुई हैं."

..2..

"2007-2008 के बजट में रेल को वित्तीय फायदा पहुंचाने वाले 'टर्न -एराउंड' की शेखी बघारनेवाले श्री. लालू प्रसाद ने 2008-2009 का रेल बजट को पेश करते हुए कहा था :

'जादू और टोना , दिखाया था पिछले साल,
इस बार पूरा इंद्रजाल देख लीजिए,'

इस इंद्रजाल ने संसद तथा देश को तो एक तरफ भ्रमित किया तो वहीं दूसरी तरफ देश- विदेश में श्री. लालू प्रसाद को 'मैनेजमेंट गुरु' के तौर पर ख्याति भी दिलाई. इस रेल बजट को पेश करते समय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी मेज थपथपाकर श्री. लालूजी को शाबासी दे रहे थे यह भी पुरे देश ने देखा. परंतु वर्तमान रेलमंत्री सुश्री ममता बैनर्जी ने श्वेतपत्रिका के द्वारा श्री. लालू प्रसाद के इस इंद्रजाल का पर्दाफाश कर दिया है. संसदीय कार्यप्रणाली की गरिमा रखते हुए देश को फंसानेवाले उस रेल बजट के लिए अर्थविद प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने देश से माफी मांगनी चाहिए," ऐसी मांग भी श्री. नाईक ने की है.

श्वेत पत्रिका में रेलवे के सामने खडे हुए प्रश्न, उनका समाधान, हिसाब रखने की पध्दति, इन विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की गई हैं. रेलवे को इस गडबड परिस्थति से बाहर निकालने के लिए ठोस उपाय करना पडेगा, ऐसा भी इस श्वेत पत्रिका में बतलाया गया है. इसलिए व्यापार, उद्योग, रेल यात्री व संसद इन सभी स्तरों पर इस श्वेत पत्रिका के आलोक में चर्चा करनी चाहिए ऐसा आवाहन भी श्री. नाईक ने किया है.

"रेलवे की इस श्वेत पत्रिका में उपनगरीय रेल की अलग से चर्चा नहीं की गई हैं. मैंने स्वयं पूर्व रेल मंत्री श्री. जॉर्ज फर्नांडिस से ऐसी श्वेत पत्रिका निकालने की विनती की थी. उसके अनुसार उन्होंनें 10 सितंबर 1990 को उपनगरीय रेल स्थिती पर श्वेतपत्रिका प्रकाशित की थी. गए 20 सालों में उपनगरीय यात्रियों की संख्या में जबरदस्त वृध्दि हुई है. अनेक नये प्रश्न उत्पन्न हुए हैं जिनका हल ढूंढना हैं. रोज कहीं न कहीं गाडियों की यातायात में रुकावटें पैदा होती है. आए दिन नयी समस्याएं उभर रही है. इसलिए मुंबई उपनगर रेल की भी नई श्वेत पत्रिका निकालनी तथा उस पर सार्थक चर्चा आवश्यक है," ऐसी मांग भी श्री. नाईक ने की हैं.

(कार्यालय मंत्री)